राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड

राष्ट्रीय डेरी योजना
मिशन मिल्क
अगली क्रांति

आहार संतुलन कार्यक्रम

सरसों

मूँगफली

खलियाँ

गेहूँ

चावल

चोकर

मसूर चूनी

चूनी

मक्का

गेहूँ

दाना

खनिज मिश्रण

पशुआहार

मेधा बायपास

संपूरक

मक्का

लोबिया

जई

बरसीम

बाजरा

चारा

पुआल

गेहूँ भूसा

सूखा चारा

सहजन

अजोला

मार्वेल घास

अन्य खाद्य पदार्थ

आम तौर पर प्रयोग होने वाले पशु खाद्य पदार्थ

कम खर्च में दुग्ध उत्पादन बढ़ाने का प्रभावी उपाय

THE JHARKHAND STATE CO-OPERATIVE MILK PRODUCERS' FEDERATION LIMITED

झारखण्ड राज्य सहकारी दुग्ध उत्पादक महासंघ

परिचय

किसान पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे पारंपरिक ज्ञान के आधार पर अपने पशुओं को स्थानीय क्षेत्र में उपलब्ध एक या दो खाद्य पदार्थ जैसे कि चोकर, खली, अनाज के दाने आदि तथा मौसम के हिसाब से हरा चारा एवं फसल अवशेष/भूसा अपने पशुओं को खिलाते हैं। बहुत कम किसान अपने पशुओं को रोजाना खनिज मिश्रण खिलाते हैं। इस प्रकार खिलाने से पशु का आहार प्रायः असंतुलित हो जाता है। असंतुलित आहार से पशु दूध कम देती है, उत्पादन लागत अधिक रहती है तथा पशु का स्वास्थ्य एवं प्रजनन क्षमता भी प्रभावित होती है। इसलिए दुग्ध उत्पादकों को असंतुलित आहार देने से होने वाली हानियों और संतुलित आहार से होने वाले लाभों को समझने की आवश्यकता है।

असंतुलित आहार से हानियाँ

- दुध का कम उत्पादन, वृद्धि–विकास दर और प्रजनन क्षमता में कमी
- पशुओं की आनुवंशिक क्षमता की तुलना में दूध का कम उत्पादन
- ब्याँत काल में कमी और दो बछड़ों के बीच अधिक अंतर होना
- पशुओं को दुध ज्वर और कीटोसिस जैसी चय–अपचय (मेटाबोलिक) से संबंधित बीमारियाँ होने की अधिक संभावना
- बाछियों को प्रथम बार गर्भवती होने में अधिक समय लगना
- कम उत्पादन तथा उत्पादक जीवन की अल्प अवधि

आहार संतुलन क्या है?

सभी पशुओं को अधिकतम विकास के लिए संतुलित आहार की आवश्यकता होती है। आहार संतुलन एक प्रक्रिया है, जो उपलब्ध खाद्य पदार्थों के द्वारा पशुओं को देय विभिन्न पोषक तत्त्वों के स्तर को संतुलित करती है, जिससे कि पशुओं के पोषण की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके।

पशु खाद्य पदार्थों की श्रेणियाँ

अनाज/दाना: इसे उर्जा तथा कार्बोहाईड्रेट का स्रोत माना जाता है। विभिन्न प्रकार के दानें जैसे मक्का, ज्वार, गेहूँ, चावल, मडुआ (रागी) इत्यादि उपलब्धता के अनुसार पशुओं को खिलाया जाता है।

खली/मील : सरसों, मूँगफली, कपास, तिल, तीसी, सोयाबीन, मक्का, ग्वार, नारियल इत्यादि की खली व मील पशुओं को खिलायी जाती है। इसे प्रोटीन व फैट का अच्छा स्रोत माना जाता है।

चोकर एवं चूनी: तेल रहित चावल का चोकर, राइस पोलिश, गेहूँ का चोकर, मक्का का चोकर के साथ–साथ पशुओं को उरद की चूनी, मसुर की चूनी, अरहर की चूनी भी क्षेत्र एवं उपलब्धता के अनुसार खिलायी जाती है।

फसल अवशिष्ट एवं सुखा चारा: पशुओं को गेहूँ, धान (पुआल), ज्वार, मक्का, बाजरे का भूसा तथा स्थानीय सुखा घास खिलाया जाता है।

हरा चारा: मक्का, बाजरा, ज्वार, बरसीम, जई, संकर नेपियर, लोबिया तथा सहजन का हरा चारा अलग–अलग मौसम में उपलब्ध होता है तथा सीमित मात्रा में खिलाया जाता है।

खनिज मिश्रण: यह मुख्य एवं लघु खनिज तत्वों का स्रोत होता है जो की आहार में प्रायः अल्प मात्रा में होता है। यह पशुओं के लिए अत्यन्त आवश्यक होता है अतः नियमित सही मात्रा में पशुओं को देना चाहिये।

राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड का आहार संतुलन कार्यक्रम

इस कार्यक्रम का उद्देश्य पशुओं से कम से कम कीमत पर अधिक से अधिक दूध का उत्पादन निश्चित करना है। इसके लिए स्थानीय रूप से उपलब्ध खाद्य पदार्थो को आवश्यकता के अनुसार पुनः समायोजित किया जाता है, ताकि पशुओं को उनके आहार से प्रोटीन, खनिज तत्त्वों, विटामिन तथा उर्जा की उपयुक्त मात्रा मिल सके। एनडीडीबी ने ऐसा साफ्टवेयर विकसित किया है जिसे लैपटॉप, नेटबुक, टेबलेट एवं फोन पर सरलता से इस्तेमाल किया जा सकता है।

कार्यक्रम को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए एनडीडीबी कार्यान्वयन एजेंसियों के तकनीकी अधिकारी, पशु पोषण विशेषज्ञ और प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण देता है। इसके बाद, ये अधिकारी स्थानीय जानकार व्यक्तियों (LRP) को स्थानीय भाषा में प्रशिक्षण देते हैं। स्थानीय जानकार व्यक्ति गाँव स्तर पर यह कार्यक्रम लागु करता है।

पशुपालकों के समक्ष आहार संतुलन कार्यक्रम का प्रदर्शन

इस सॉफ्टवेयर द्वारा पशुओं में कम से कम लागत में आहार प्रदान करने के निम्नलिखित चरण हैं –

1. **पशु पंजीकरण:** पशुओं की पहचान के लिए सबसे पहले कान की कड़ी (इयर टैग) लगाकर चिन्हित किया जाता है। सॉफ्टवेयर में पशुओं की जाति, नस्ल, उम्र, ब्याँत संख्या और गर्भावस्था आदि की जानकारी दी जाती है। इसके अलावा पशु मालिक की भी जानकारी जैसे नाम, पता, सामाजिक स्थिति आदि शामिल है। सभी जानकारी को भरने के पश्चात् सर्वर में पशु पंजीकरण हो जाता है।
2. **पशुओं के पोषण आवश्यकताओं का मूल्यांकन:** इस सॉफ्टवेयर की मदद से पशुओं के प्रकार जैसे कि गाय या भैंस, पशु की आयु, शरीर का वजन, दुग्ध उत्पादन, दुग्ध वसा, गाभिन अवस्था को ध्यान में रखते हुए पशुओं की पोषण आवश्यकताओं की जानकारी मिलता है।
3. **प्रचलित खाद्य रीतियों के आधार पर पशुओं के पोषण स्थिति का मूल्यांकन :** इस सॉफ्टवेयर में देश के विभिन्न भागों में उपलब्ध खाद्य पदार्थों, घास और चारों की रासायनिक संघटन की जानकारी दी गई है। प्रचलित खाद्य रीतियों को ध्यान में रखते हुए पोषक तत्वों का मूल्यांकन किया जाता है तथा इसकी तुलना वर्त्तमान स्थिति से की जाती है। यह सूचना हमें वर्तमान आहार में पोषक तत्वों की कमी/अधिकता के बारे में जानकारी तथा प्रति लीटर दूध उत्पादन की लागत की जानकारी देता है।
4. **स्थानीय स्तर पर उपलब्ध खाद्य पदार्थो के प्रयोग द्वारा कम लागत में संतुलित आहार का निर्माण:** पशु खाद्य पदार्थों के रासायनिक संघटन तथा खाद्य पदार्थों की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए साफ्टवेयर द्वारा संतुलित आहार बनाया जाता है। दुग्ध उत्पादकों को उनके पशुओं के लिए स्थानीय स्तर पर उपलब्ध खाद्य पदार्थों की मात्रा को क्षेत्र विशिष्ट खनिज मिश्रण के साथ समायोजित करने की सलाह दी जाती है। खाद्य पदार्थों में परिवर्तन होने पर स्थानीय जानकार व्यक्ति सॉफ्टवेयर के द्वारा कम लागत में आहार की पुनः योजना बनाते है।

तकनीकी अधिकारी द्वारा स्थानीय जानकार व्यक्तियों को आहार संतुलन कार्यक्रम की जानकारी

दुग्ध उत्पादक अपनी गाय को संतुलित आहार खिलाते हुए

स्थानीय जानकार व्यक्ति दुग्ध उत्पादन की आवश्यकतानुसार, उससे मिलता है और दूध की गुणवत्ता और मात्रा से सम्बन्धित विभिन्न परीक्षणों का रिकार्ड रखता है, जिसमें आहार संतुलन कार्यक्रम के लागू होने से पूर्व और उसके पश्चात् दूध के उत्पादन की लागत तथा प्रति पशु शुद्ध आय में वृद्धि का हिसाब भी शामिल है।

इस परियोजना का एक लक्ष्य यह भी है कि पशुओं को एक विशिष्ट पहचान प्रदान करना, उन्हें सूचना तंत्र प्रणाली से जोड़ना तथा किसानों के घर पर परामर्श सेवाएँ पहुँचा कर विस्तार सेवा के क्षेत्र में नये आयाम कायम करना।

झारखण्ड राज्य में आहार संतुलन कार्यक्रम को झारखण्ड राज्य सहकारी दुग्ध उत्पादक महासंघ द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है।

कार्यान्वयन एजेंसी (झारखण्ड मिल्क फेडरेशन) इस कार्य के लिए स्थानीय जानकार व्यक्ति को आवश्यक सुविधाएँ भी देती है, जैसे कि एन०डी०डी०बी० के आहार संतुलन कार्यक्रम सॉफ्टवेयर युक्त नेटबुक, तोलने की मशीन, मापक टेप तथा पशुओं की पहचान के लिए कान की कड़ी (इयर टैग्स)।

स्थानीय जानकार व्यक्ति आहार संतुलन कार्यक्रम को कार्यान्वित करने के लिए पूर्णतः समर्पित भाव से काम करते है और वे अपने गाँव के किसानों को सेवाएँ देते है।

आहार संतुलन कार्यक्रम के लाभ

- स्थानीय स्तर पर उपलब्ध पशु खाद्य पदार्थों का प्रयोग करके कम कीमत में पशुओं के लिए संतुलित आहार
- दूध उत्पादन में वृद्धि तथा फैट एवं एस०एन०एफ० में भी वृद्धि
- शुद्ध आय में वृद्धि
- प्रजनन क्षमता में सुधार
- दो बछड़ो के बीच में अंतर कम होता है, जिससे पशुओं के उत्पादक जीवन में वृद्धि होती है।
- पशुओं के सामान्य स्वास्थ में सुधार
- बछड़ों–बछियों की विकास दर में सुधार, जिससे कि वे शीघ्र युवा होते है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :–
झारखण्ड राज्य सहकारी दुग्ध उत्पादक महासंघ लिमिटेड